RNI No. RAJHIN/2014/58645
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY/220/2018-20
e-paper : www.srushtiagronews.com

मुख्यमंत्री ने चम्बल-सवाई माधोपुर-नादौती पेयजल परियोजना का किया निरीक्षण

सृष्टि एग्रो

वर्ष -5 | अंक-7 | जयपुर 16 से 30 जून 2018 | मूल्य - 2 रुपए | पाक्षिक | पृष्ठ-8

फसली ऋण माफी योजना ऐतिहासिक साबित होगी : सैनी

कोटा (विसं)। कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने कहा कि प्रदेश का किसान सम्मानजनक जीवन के साथ आर्थिक रूप से भी सशक्त हो, इसके लिए फसली ऋण माफी योजना ऐतिहासिक साबित होगी। राज्य में कृषक कर्जा माफी आयोग का गठन किये जाने से कर्जे की चिंता से किसानों को हमेशा मुक्ति मिलेगी। सैनी कोटा जिले के लाडपुरा पंचायत समिति क्षेत्र के ग्राम काल्याखेडी के गोपालपुरा ग्राम सेवा सहकारी समिति में आयोजित फसली ऋण माफी योजना के शिविर में कहा कि किसान कर्ज में नहीं रहे इस के लिए सरकार ने अनेक कल्याणकारी योजनाएं चलाई हैं इसका लाभ लेने के लिए आगे आना होगा। सरकार किसानों के सुख-दुःख में हमेशा साथ रही है

ओलावृष्टि का समय हो या फसल बीमा योजना में नुकसान के समय किसानों को राहत प्रदान करने की बात हो, देश में सर्वाधिक लाभ प्रदेश के किसानों को दिया गया है। समर्थन मूल्य पर कृषि जिंस की खरीद प्रक्रिया से भी किसानों को सरकार द्वारा राहत प्रदान की गई है। पारदर्शी प्रकिया से गेंहू, सरसों, चना एवं लहसुन की खरीद की गई है। उन्होंने कहा कि सरकार ने कर्ज माफी के साथ ऋण की नवीन स्वीकृति एवं 5 लाख से बढाकर 10 लाख रू का बीमा कवर किसानों को शिविरों में दिया जा रहा है, इससे किसान परिवारों को दुःख की घडी में चिंता से मुक्ति मिल गई है। जिला प्रभारी मंत्री ने कहा कि किसानों को अब समय के अनुसार खेती के तरीकों में परिवर्तन कर सरकार की योजनाओं का लाभ लेने के लिए जागरूक होकर कार्य करना होगा। उन्होंने डेनमार्क की तर्ज पर सहकारिता आन्दोलन को बढाते हुए सभी आवश्यकताओं को इससे जोडने का आव्हान किया।

रबी में हुई रिकार्ड 10 लाख 54 हजार मै. टन खरीद: किलक

जयपुर (कासं)। सहकारिता एवं गोपालन मंत्री अजय सिंह किलक ने बताया कि प्रदेश में अब तक एक ही सीजन में 3 लाख 60 हजार 585 किसानों से 4 हजार 74 करोड़ रुपये मूल्य की 10 लाख 54 हजार मै. टन से अधिक की कृषि उपज की खरीद की जा चुकी है जो मात्रा एवं लागत दोनों हि दृष्टि से एक रिकार्ड है। किलक ने बताया कि हमारा उद्देश्य किसानों को हर कदम पर सहायता उपलब्ध कराना है और हम इसमें कोई कसर नहीं रख रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में किसानों से समर्थन मूल्य पर

किसानों को किया 2 हजार 98 करोड़ रुपये का भुगतान

सरसों, चना एवं गेहूं तथा बाजार हस्तक्षेप योजना के तहत लहसुन की खरीद का कार्य तेजी से किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि प्रदेश के 1 लाख 87 हजार 247 किसानों को उनकी उपज के समर्थन मूल्य पर बेचान के लिये 2 हजार 98 हजार करोड़ रुपये का भुगतान उनके पंजीकृत बैंक खातों में ऑनलाइन कर दिया गया है। राज्यि सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि किसानों को उनकी उपज तुलाई के 7 से 10 दिनों में भुगतान कर दिया जाये। सहकारिता मंत्री ने बताया कि गत साढ़े चार वर्ष में 10 हजार 578 (शेष पेज 2 पर)

मुख्यमंत्री को 'पर्सन ऑफ द ईयर' अवार्ड की ट्रॉफी भेंट

जयपुर (कासं)। राजस्थान को सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पायोनियर स्टेट बनाने के लिए मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे को मिली 'पर्सन ऑफ द ईयर' अवॉर्ड की ट्रॉफी प्रमुख शासन सचिव सूचना प्रौद्योगिकी अखिल अरोरा ने मुख्यमंत्री निवास पर श्रीमती राजे को भेंट की। इस अवसर पर मुख्य सचिव डीबी गुप्ता भी मौजूद थे। श्रीमती राजे की ओर से वाणिज्य और उद्योग मंत्री राजपाल सिंह शेखावत ने पिछले दिनों नई दिल्ली में आयोजित बीडब्ल्यू बिजनेस वर्ल्ड डिजिटल इंडिया समिट के दौरान यह पुरस्कार प्राप्त किया था। राज्य में ई-गवर्नेंस को मजबूती प्रदान करने और सेवाओं डिजिटलीकरण की दिशा में किये गए प्रयासों के लिए पहली बार किसी मुख्यमंत्री को यह सम्मान दिया गया। उल्लेखनीय है कि इस समिट के दौरान केंद्रीय मंत्रालयों और राज्य के विभिन्न सरकारी विभागों के बीच प्रतिस्पर्धा में राजस्थान सरकार के आईटी और संचार विभाग को 10 नवाचारों के लिए पुरस्कार मिले थे।

इनमें अभय कमांड सेंटर, महिला सुरक्षा एप, इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड, आई-स्टार्ट, भामाशाह योजना, सीएम हेल्पलाइन, राजस्थान सम्पर्क, राज-काज, ई-मित्र तथा राजस्थान पेमेंट प्लेटफार्म को पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

हाईटेक सीड इण्डिया प्रा. लि. हैदराबाद (राजस्थान सम्पर्क सूत्र-9828427542)

सम्पादकीय

कृषि में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों की भूमिका

हम मानव सभ्यता के एक ऐसे समय में आ गए हैं जहाँ सभ्यता में कच्चे माल और संसाधन अधिक दुर्लभ होते जा रहे हैं, कुछ चुनौतियां जो कभी कल्पना से परे थी जैसे प्रदूषण, उत्सर्जन में वृद्धि, मिट्टी की गिरावट और पानी की कमी वो आज एक स्थायी समस्या बनती जा रही है। विकासशील देशों में अधिकांश किसान परिवार ग्रामीण इलाकों में रहते हैं वो प्रौद्योगिकी और महत्वपूर्ण कृषि सहायता सेवाओं से अपरिचित हैं जोकि कृषि गतिविधियों को पूरा करने के लिए आवश्यक हैं। यद्यपि कृषि और मोबाइल टेक्नोलॉजी का ऊपरी सतह पर कोई जुड़ाव नहीं दिखता है लेकिन भीतरी तौर पर बढ़ती हुई मात्रा यह प्रमाणित करती है कि मोबाइल और क्लाउड आधारित अनुप्रयोगों का उपयोग करना न केवल इन स्थिर चुनौतियों का समाधान करता है बल्कि बड़े पैमाने पर कृषि आधारित कंपनियों और छोटे-छोटे किसान के लिए वित्तीय मूल्य भी बनाता है ऐसे मोबाइल प्रौद्योगिकी और पोर्टेबल वायरलेस डिवाइसों की शुरूआत ने विकसित और विकासशील दोनों देशों में कृषि श्रृंखलाओं के भीतर उपयोग किए जाने वाले परिवर्तनात्मक सेवाओं और अनुप्रयोगों के निर्माण को प्रेरित किया है। विस्तार और सलाहकार सेवाएं छोटे-छोटे किसानों के लिए प्रासंगिक हैं, जो विकासशील देशों में कृषि और खाद्य आपूर्ति श्रृंखलाओं के आधार बहुत है विकसित देशों में, मशीनीकरण अधिक उन्नत है और कृषि श्रम बल काफी कम है। वही जहां विकासशील देशों में कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा कृषि में कार्यरत है सामान्यत: वह उत्पादकों और व्यापारियों को सेवाएं देने के लिए मोबाइल तकनीक का अधिक उपयोग किया जाता है। आज के दौर में मोबाइल एप्लिकेशन ने भी उन्नत कृषि तकनीकों की मूल्य श्रृंखला में अपना नाम सबसे ऊपर जोड़ लिया है। कृषि मोबाइल प्रौद्योगिकी में बाजार की जानकारी शामिल होती है जैसे व्यापारिक सुविधाएं, मौसम संबंधी जानकारी, पीअर-टू-पीयर लर्निंग और वित्तीय सेवाओं जैसे भुगतान, ऋण और बीमा आदि जो किसानो को कृषि से जुड़े लाभ देने में सहायक होती है, क्लाउड कंप्यूटिंग, आईटी सिस्टम, ऑनलाइन शिक्षा और मोबाइल फोन के प्रसार की मदद से सबसे गरीब समुदायों के किसानों को कृषि संबंधी जानकारी फैलाना आसान हो गया है। ऐसे संपर्क और सूचना प्रवाह का एक लाभ यह है कि यह किसानों को बेहतर भूमि प्रबंधन निर्णय लेने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, यह फसल के रोपण हेतु बेहतर योजना के लिए मौसम की स्थिति के साथ संयोजन में मिट्टी की स्थिति की निगरानी भी कर सकता है। इसी प्रकार, भौगोलिक सूचना प्रणाली का कीटनाशक और पशु रोगों पर पूर्व-प्रभावी जानकारी प्रदान करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है ताकि किसान पूर्व जानकारी के अनुसार निवारक उपायों का प्रबंध कर सके। विशेष रूप से सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका के साथ किसानों को समय पर उनकी आवश्यक जानकारी के साथ जोड़ने के लिए पिछले दशक में बहुत अधिक ध्यान दिया गया है। मोबाइल और क्लाउड कंप्यूटिंग प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके उर्वरक, बीज और पानी का अनुकूल उपयोग भी किया जा सकता है। यह खपत को कम करते हुए किसानों को पैसे बचाने में मदद करता है। ये एप्लिकेशन दुनिया भर के कृषि उत्पादकों से कनेक्ट करते हैं और भावी पीढ़ियों के लिए अपने संसाधनों की सुरक्षा करते हुए उन्हें अपनी भूमि की उत्पादकता को अधिकतम करने के तरीके के बारे में साझा ज्ञान प्रदान करते हैं। इस तरह से साझा ज्ञान अधिक महत्वपूर्ण हो रहा है क्योंकि कृषि उत्पादक पर बढ़ते आबादी के लिए भोजन, फाइबर और ईंधन की जरूरतों को पूरा करने का भार है। कृषि में आईसीटी के सबसे अधिक लाभकारी पहलुओं में से एक वास्तविक समय की मूल्य-निर्धारण की जानकारी है यह पहलु किसानों को यह तय करने में मदद करता है कि उन्हें अपने उत्पाद का भंडारण करना है या बेचना है यह उन्हें बेहतर फसल की पहचान करने, उसकी रुपए के विभिन संसधानों के उपयोग आदि के बारे में बताता है मोबाइल सन्देश के रजिस्ट्रेशन द्वारा किसान यह जानकारी जैसे फसल की कीमतों, फसल की खेती और मौसम पर स्थानीय जानकारी भी प्राप्त कर सकता है।

पेज 1 का शेष...

रबी में हुई रिकार्ड...

करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की 31 लाख 63 हजार 676 मै. टन की उपज का क्रय कर रिकार्ड स्थापित किया है। जबकि गत सरकार ने किसानों से मात्र 1180.39 करोड़ रुपये मूल्य की 7 लाख 82 हजार 783 मै. टन उपज की खरीद की थी।

रिकार्ड खरीद केन्द्र स्थापित कर हो रही है खरीद: प्रमुख शासन सचिव, सहकारिता अभय कुमार ने बताया कि यह पहली बार है कि किसानों की सहूलियत के लिये प्रदेश में रिकार्ड 524 खरीद स्थापित किये गये हैं। किसानों में ऑनलाइन पंजीयन के माध्यम से खरीद की जा रही है जिसके प्रति किसानों में जबरदस्त उत्साह है। उन्होंने बताया कि चालू सीजन में 6 लाख 25 हजार 481 किसानों ने अपनी उपज को बेचने के लिये पंजीयन करवाया है। रजिस्ट्रार, सहकारिता राजन विशाल ने बताया कि सरसों के लिये 225 खरीद केन्द्र बनाकर 1 लाख 54 हजार 239 किसानों से 1 हजार 691 करोड़ 71 लाख रुपये मूल्य की 4 लाख 22 हजार 926 मैट्रिक टन की खरीद की जा चुकी है। इसी प्रकार चने के लिये बनाये गये 194 खरीद केन्द्रों पर 1 लाख 77 हजार 660 किसानों से 2 हजार 5 करोड़ 63 लाख रुपये मूल्य का 4 लाख 55 हजार 824 मै. टन चना तथा गेहूं के लिये बनाये गये 95 खरीद केन्द्रों पर 15 हजार 353 किसानों से 221 करोड़ 29 लाख रुपये मूल्य का 1 लाख 27 हजार 544 मै. टन गेहूं खरीदा जा चुका है।

बाजरे की उन्नत खेती

बाजरे की फसल चारे और दाने के लिए बोई जाती है। यह पशुओं का भोजन है तथा मनुष्य भी इसके दाने की रोटियां और खिचड़ी बनाकर शरद ऋतु में खाते हैं। इसके अतिरिक्त इसकी बाल को भी भूनकर भी खाया जाता है।

जलवायु: किसान भाइयों बाजरे के लिए नम तथा गर्म जलवायु उपयुक्त रहती है। तथा फसल में फूल आने पर स्वच्छ वायुमंडल, गर्म मौसम की आवश्यकता होती है। इसकी फसल के लिए 20-30 ताप उपयुक्त माना जाता है। इसकी फसल 40 सेमी. से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में भी की जा सकती है।

भूमि: बाजरे की खेती के लिए बलुई तथा बलुई दोमट भूमि अधिक उपयुक्त मानी जाती है। इसके अतिरिक्त यह काली मिट्टी, दोमट, कंकरीली आदि मिट्टियों में उगाया जा सकता है। इसकी फसल के लिए अधिक उपजाऊ भूमि का होना अनिवार्य नहीं समझा जाता है।

खेत की तैयारी: बाजरे की बुवाई के लिए खेत तैयार करने के लिए पहले मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई (लगभग 15 सेमी) करनी चाहिए। इसके बाद 2-3 जुताई देसी हल या कल्टीवेटर से करनी चाहिए जिससे खेत की मिट्टी भुरभुरी हो जाये तथा खेत पर पटेला लगाकर खेत को समतल कर देना चाहिए। अंतिम जुताई के समय 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हैप्टाक्लोर की धूल डालनी चाहिए। जिससे खेत में दीमक न लग सके।

बुवाई का समय: बाजरे की फसल की बुवाई का उपयुक्त समय 15 जुलाई से 15 अगस्त तक माना जाता है। इस समय में किसान वर्षा होने पर अपनी फसल की बुवाई करते हैं क्योंकि बाजरे की अधिकतर खेती वर्षा पर निर्भर करती है।

बीज की मात्रा

बाजरे की फसल के लिए बीज की मात्रा इस प्रकार है-

-दाने के लिए 4 से 5 किग्रा प्रति हेक्टेयर।

चारे के लिए 12 से 14 किग्रा प्रति हेक्टेयर।

बीजोपचार: अंकुरण के समय फसल को रोग और कीटों से बचाने के लिए बीज को बोने से पूर्व उपचारित कर लेना चाहिए। इसके बीज को 2.5 ग्राम थाइरम से 1 किग्रा बीज को उपचारित कर लेना चाहिए।

खाद और उर्वरक: बाजरा की अच्छी पैदावार लेने के लिए फसल में उर्वरक का उपयोग करना चाहिए जो निम्नलिखित मानक से देना चाहिए-

-बाजरे की फसल को खाद देने से पूर्व भूमि की जांच करनी चाहिए और कृषि विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार ही खाद की मात्रा देनी चाहिए। वैसे सामान्यता उर्वरकों की निम्नलिखित मात्राएं इस की फसल के लिए पर्याप्त होती हैं-

-देसी जातियों के लिए: 45 किग्रा नाइट्रोजन, 25 किग्रा फास्फोरस, 25 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर देना चाहिए।

संकर जातियों के लिए : 90 किग्रा नाइट्रोजन, 40 किग्रा फास्फोरस, 40 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर देना चाहिए।

-विधि द्व बुवाई से पूर्व कार्बनिक खाद फसल की बुवाई के एक महीना पहले देनी चाहिए जिससे वह मिट्टी में अच्छी प्रकार से सड़ जाये तथा उर्वरकों के नाइट्रोजन की आधी मात्रा, फास्फोरस तथा पोटाश की संपूर्ण मात्रा बुवाई के समय गहरे संस्थापन विधि से देनी चाहिए। इसके बाद शेष बची नाइट्रोजन की आधी मात्रा फसल में 25-30 दिन बाद तथा नाइट्रोजन की मात्रा बलियाँ निकलते समय नाइट्रोजन के रूप में देनी चाहिए।

सिंचाई तथा जल निकास: अधिकांश क्षेत्रों में बाजरे की फसल वर्षा पर निर्भर करती है। जिन क्षेत्रों में सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं वहां पर यदि वर्षा न हो तो 2-3 सिंचाई करनी चाहिए। जिससे खेत में पर्याप्त नमी बनी रहे। किसान भाइयों यदि अधिक वर्षा हो जाए और खेतों में अतिरिक्त जल भर जाता है तो उसकी निकासी कर देना चाहिए।

निराई-गुड़ाई तथा खरपतवार नियंत्रण

फसल के अंकुरण के 20-25 दिन बाद इसकी निराई-गुड़ाई खुरपी से कर देनी चाहिए।

-किसान भाइयों खरपतवार खेत में न उगे इसके लिए 1 किग्रा एट्राजिन को 800 लीटर पानी में घोलकर फसल के अंकुरण से पूर्व बुवाई के बाद एक हेक्टेयर भूमि में छिड़काव कर देना चाहिए।

कटाई

किसान भाइयों बाजरे की फसल 2.5 से 3.5 मास के बीच पककर तैयार हो जाती है। जब बालियों में दाने अच्छी प्रकार से पक जायें तो खेत की कटाई कर लेते हैं तथा कटी हुई फसल को खलिहान में एकत्र कर लेते हैं। जहां पर उनकी बालियों को काटकर धूप में सुखा देते हैं तथा चारे के लिए बोई गई फसल को बालियों के निकलते ही काट कर पशुओं को खिला देते हैं।

उपज: बाजरे की देसी जातियों की उपज 15-20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तथा संकर जातियों की उपज 25-30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। सूखी कड़वी की उपज 80-100 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तथा हरे चारा की उपज 250 से 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होती है।

ज्वार की आधुनिक एवं उन्नत खेती

ज्वार भारत में उत्तरी राज्यों की एक प्रमुख चारे की फसल हैं। इसे विभिन्न राज्यों में खरीफ, रबी तथा जायद तीनो ऋतुओं में उगाया जाता हैं। उत्तर प्रदेश में इसे जून-जुलाई, दिल्ली में जून के तीसरे सप्ताह से चौथे सप्ताह तक, मध्यप्रदेश में जून के अंतिम सप्ताह तक, तमिलनाडु में सितम्बर तथा जुलाई का तीसरा सप्ताह तथा आंध्रप्रदेश में जून-जुलाई, अगस्त का अंतिम सप्ताह से सितम्बर का प्रथम सप्ताह, सितम्बर के मध्य से सितम्बर के अंत तक में खेती की जाती हैं।

ज्वार: कम वर्षा तथा शुष्क कृषि क्षेत्रों के लिए यह बहुत उपयोगी चारे की फसल हैं। इसलिए इसको यहां की सबसे उपयोगी फसलों के लिए जाना जाता हैं। भारत के मध्य तथा दक्षिणी विभागों बरानी क्षेत्रों में इसकी खेती अधिक की जाती हैं। इसके दानो से चपाती, दलियां, खीर, भुना- तला दाना बनाया जाता हैं।

उत्पति तथा वितरण: ज्वार की उत्पति के संबंध में वैज्ञानिकों का अलग-अलग विचार हैं। डी- कन्डोल 1884 तथा हुकर ज्वार का जन्म अफ्रीका मानते हैं, जबकि बेबीलीव (1926-35) के अनुसार इस फसल का जन्म स्थल अफ्रीका का आबिसिनिया प्रदेश हैं।

बाल 1910 के अनुसार ज्वार का जन्म स्थान भारत हैं। विश्व में ज्वार की खेती करने वाले देशों में अफ्रीका, भारत, चीन तथा अमेरिका का प्रमुख स्थान हैं। इसके अतिरिक्त ईरान, तुर्किस्तान, पाकिस्तान, कोरिया, ऑस्ट्रेलिया तथा दक्षिणी यूरोप के कुछ हिस्सों में ज्वार की खेती की जाती हैं।

जलवायु: यह वर्षा आधारित खेती की प्रमुख फसल हैं जिसे सूखे में भी उगाया जा सकता हैं। इसकी खेती 400-1000 मिमी. वर्षा वाले क्षेत्रों में सफलतापूर्वक की जा सकती हैं। देश के विभिन्न भागों में जून से अक्टूबर के मध्य अधिक वर्षा होती हैं, जिससे असिंचित अवस्था में इसकी खेती मुख्य रूप से खरीफ में हो पाती हैं। आन्ध्रप्रदेश में यह खरीफ तथा रबी दोनों मौसमों में उगाई जाती हैं। कर्नाटक तथा महाराष्ट्र में 70-75प्रश. खेती रबी मौसम में हैं। तमिलनाडु में यह तीनों मौसमों में उगाई जाती हैं। ज्वार का अंकुरण 200 सेल्सियस से अधिक तापक्रम पर चौथे दिन हो जाता हैं।

मिट्टी तथा उसकी तैयारी: एक जुताई मिटटी पलटने वाले हल से करने के बाद 2-3 जुताइयाँ देशी हल तथा कल्टीवेटर से करके मिट्टी को भुरभुरी बना लेते हैं। प्रत्येक जुताई के पश्चात् पाटा लगाना अतिआवश्यक होता हैं, जिससे मिटटी भरभूरी हो जाती हैं तथा मिटटी में पर्याप्त नमि भी संरक्षित हो जाती हैं।

खाद एवं उर्वरक: कम उर्वरकता की मिट्टी में 10-15 टन प्रति हेक्टेयर कम्पोस्ट खाद देने की आवश्यकता पड़ती हैं। संकर प्रजातियों में 100-150 की.ग्रा. नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर देने की आवश्यकता होती हैं। देशी प्रजातियों में कम नाइट्रोजन की आवश्यकता होती हैं। मीठी सूडान घास (एस.एस.जी. -59-3) में 120 की.ग्रा. नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर देना लाभकारी होता हैं।

ज्वार के फसल- चक्र में बरसीम अथवा संजी को लगाने से अकार्बनिक खाद की मांग कम हो जाती हैं। इसके लिए 30-40 की.ग्रा. फास्फोरस तथा 20-25 की.ग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर देना आवश्यक होता हैं। अधिक नाइट्रोजन के साथ कम फास्फोरस को प्रयोग करने से पौधों में हाइड्रोसायनिक अम्ल (एस.सी.एन.) की मात्रा बढ़ जाती हैं। इसकी मात्रा 25-30 दिन के पौधे में अधिक होती हैं। गर्मी व सूखे की स्थिति में पौधों में हाइड्रोसायनिक अम्ल की बढ़ोतरी होती हैं। हल्की मिट्टी में नाइट्रोजन 2 बार तथा गीली मिट्टी में बुवाई के समय ही दिया जा सकता हैं।

बीज दर: मानसून के पश्चात् ज्वार फसल की बुवाई करने से उनके तनो पर हानिकारक मक्खियों का प्रकोप कम होता हैं तथा उत्पादन भी अधिक

मिलता हैं खरीफ में 20-25 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर तथा जायद में भी 30-40 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती हैं।

पूसा चरी तथा विदिशा 60-1 प्रजातियों में 55-65 किग्रा. जैसे- जे.एस.-2 एस.एल-44 प्रजातियों के प्रति हेक्टेयर 35-40 की.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती हैं। प्रति एक लाख अस्सी हजार से दो लाख तक पौधों की संख्या होने पर सर्वाधिक चारे की उत्पादन मिलती हैं। रबी ज्वार बीस हजार पौधे की संख्या होनी चाहिए।

बीज शोधन: बुवाई के पूर्व बीज का शोधन फफूंदी नाशक रसायन जैसे-एग्रोसॉन, सेरेसोन अथवा केपटोन आदि से करना चाहिए। इसके लिए 2-2.5 ग्राम रसायन प्रति किग्रा. बीज की दर से आवश्यक होता हैं।

बुवाई विधि: खरीफ में ज्वार के लिए पक्ति से पंक्ति की दुरी 45 सेमी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 10-12 सेमी. रखते हैं। इस विधि में बीज की गहराई 2.5 सेमी. से अधिक नहीं रखनी चाहिए। अधिक गहराई में बीज का अंकुरण नहीं होता।

सिंचाई: खरीफ ज्वार की फसल वर्षा आधारित होती हैं। अत: सूखे की स्थिति में 15-20 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए। यदि सूखा अधिक हो तो, सिंचाई की अवधि को कम या अधिक कर लेने से उत्पादन सर्वाधिक मिलता हैं। जायद की फसल में 10 दिन के अंतराल पर पहली एवं दूसरी सिंचाइयाँ 15-20 दिन के अंतराल पर शेष सिंचाइयों को करनी चाहिए जिससे खेत में नमी सदैव बनी रहें।

फसल चक्र: अच्छे गुणवत्ता वाले चारे के लिए द्विदलीय चारे की फसल के साथ खाने वाले चारे की फसल को लगाना चाहिए। इस पद्धति से हरे चारे की पौष्टिकता तो बढ़ती ही हैं साथ ही हरा चारा सुपाच्य हो जाता हैं।

कीट एवं रोग नियंत्रण: वर्षा ऋतु की फसलों में रोग तथा किट पतंगों का प्रकोप अधिक होता हैं। इसके लक्षण एवं निदान निम्न हैं।

तना छेदक: ठस कीट की सुन्डिया तनों में छेद करके अंदर के मुलायम भाग को खा जाती हैं जिससे पौधे खोखले हो जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए बुवाई से 20-25 दिन बाद लिंडेन (6प्रश.) अथवा कार्बोफ्यूरान (3प्रश.) दाने का 20 किग्रा./हे. की दर से खेत में छिटकना आवश्यक हैं।

प्ररोह मक्खी: इस मक्खी का आकर घरेलू मक्खी से छोटा होता हैं। इसके शिशु (मेगेट) बीज के अंकुरण के समय से ही फसल को हानि पहुँचाना प्रारम्भ कर देते हैं। इन मक्खियों के रोकथाम के लिए एक लीटर मिथाइल-ओ-डिमेटान (25 इ.सी.) अथवा मोनोक्रोटोफास(36 डब्ल्यू.एस.सी.) 500 लीटर प्रति हेक्टेयर पानी में घोल बनाकर फसलों पर छिड़काव करना चाहिए।

इयर हेड मिज: इसके प्रौढ़ मिल लाल रंग की होती हैं, जो पुष्प तंत्र पर अंडे देती हैं। लाल मेगेट्स दानों के अंदर रहकर उसका रस चुस्ती हैं। जिससे दाने सुख जाते हैं। इसके निदान के लिए कार्बाइल (50प्रश.) चूर्ण की 1.25 किग्रा. मात्रा प्रति हेक्टेयर खेत में छिड़काव के लिए पर्याप्त होता हैं।

यह बहुत ही छोटा, आठ पैर वाला कीड़ा होता हैं। यह पत्तियों के निचली सतह पर जाले बुनकर उल्टी के अंदर रहकर पत्तियों के रस को चुस्ती रहती हैं। इससे ग्रसित पत्तियां लाल रंग की होकर सुख जाती हैं। इससे निदान के लिए डाईमेथोएट (30 इ.सी.) एक लीटर अथवा डायजिनान (20 इ.सी.) 1.5-2.0 लीटर 00-5004 लीटर पानी में घोल लेते हैं। यह एक हेक्टेयर खेत के लिए पर्याप्त होता हैं।

खरपतवार एवं उसका नियंत्रण: खरीफ की फसल में खरपतवार अधिक उगते हैं। फसल की प्रारम्भिक अवस्था में निकाई करने से खरपतवार नियंत्रण हो जाते हैं। एक किग्रा. एट्राजिन करने से भी खरपतवार का नियंत्रण हो जाता हैं। ज्वार की फसल में जॉनसन घास (वरु घास) को प्रकोप होने पर फसल-चक्र) में परिवर्तन कर इस घास को नियंत्रित किया जा सकता हैं।

कटाई: बुवाई से 35-40 दिन बाद पहली कटाई करनी चाहिए। इसके बाद की कटाइयां 25-30 दिन के अंतराल पर करते रहना चाहिए। सूडान घास (एस.एन.जी.-59-3) की एक से अधिक कटाईयां की जाती हैं। इस घास से वर्ष भर चारे की उपलब्धता बनी रहती हैं। इस प्रजाति की पहली कटाई बुवाई से 55-60 दिन बाद की जाती हैं और इसके बाद की कटाइयाँ 54-4 दिन बाद करते रहना चाहिए। प्रत्येक कटाई 5 सेमी. की ऊंचाई पर की जानी चाहिए जिससे पौधे में पुनर्विकास अच्छा होता रहें। कम उर्वराशक्ति वाली भूमियों के जायद फसल की कटाई बुवाई लगभग 50-60 दिन बाद तथा शेष कटाईयां 25-30 दिन बाद करते रहना चाहिए।

उपज: ज्वार की फसल से 200-250 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हरे चारे का उत्पादन प्राप्त होता है।

बीज उत्पादन: उत्तरी भारत में ज्वार से पर्याप्त बीज का उत्पादन नहीं होता हैं। जे.एस. 20 प्रजाति से उत्तरी भारत में कम उपज मिलती हैं, जबकि दक्षिणी भारत में 10-12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर बीज की उपज होता हैं। यदि सूडान घास के पेड़ी वाली फसल को फरवरी माह में खाद एवं सिंचाई अच्छी तरह दिया जाए तो गर्मी में पर्याप्त बीज का उत्पादन हो जाता हैं। जून के प्रथम पखवाड़े की बुवाई की तुलना में अधिक बीज उत्पादन होता हैं। सूडान घास (एस.एस.जी.-59-3) की बुवाई कर देने से अधिक बीज का उत्पादन मिलता हैं।

भंडारण: ज्वार के सूखे बीज जिसमे 12प्रश. से अधिक नमी न हो उसे किसी नमी रहित स्थान पर भंडारित करते हैं। घर अथवा बर्तन जहां पूर्व में भंडारण किया गया हो, उसे मेलाथियान के 1प्रश. घोल से दीवारों पर छिड़काव करके किट रहित कर लेना चाहिए। बीज वाले बर्तन में ई.डी.बी. एम्पुल की एक तोड़ कर प्रति क्विंटल बीज की दर से अनाज में डाल देना चाहिए। इससे अंदर की गैस बाहर नहीं निकलती। इससे अंदर के कीड़े मर जाते हैं तथा साथ ही साथ बाहर के कीड़े भी अंदर प्रवेश नहीं कर पाते या अंदर जाने पर मर जाते हैं।

हाईटेक सीड्स का '4201 प्लस' बाजरा किसानों के मन भाया

जयपुर। हाईटेक सीड्स कंपनी का संकर बाजरा '4201 प्लस' को लेकर किसानों में भारी उत्साह है। कंपनी के रिजनल मैनेजर अमित कुमार ने बताया कि 4201 प्लस बाजरा में ज्यादा फुटाव होती है तथा इसकी ऊंचाई 9-10 फीट तक होती है। इसका सिट्टा मोटा, चमकदार व दाना गोल होता है। 4201 प्लस की पैकिंग 1.25 किग्रा पैकिंग में उपलब्ध है। 4201 प्लस बाजरा रस्ट व फफूंद के प्रति काफी सहनशील है और इसका चारा अंत तक हरा-भरा रहता है जिससे पशुओं को लंबे समय तक हरा चारा खिलाने को मिलता है।

हाईटेक सीड्स हमेशा किसानों के बीच रहती है तथा कम्पनी के कर्मचारी गांव-गांव में किसानों के खेतों में पहुंचकर किसान भाईयों को जानकारी उपलब्ध करा रहे हैं। अमित कुमार ने बताया कि इस वर्ष कंपनी का लक्ष्य 300 टन बाजरा बेचने का रखा गया है। कंपनी इस लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर लेगी क्योंकि कंपनी के कर्मचारी गांव-गांव, खेत-खेत जाकर 4201 प्लस की जानकारी किसानों को दे रहे हैं। गत वर्ष इस किस्म के परिणाम जयपुर, भरतपुर, अलवर और करौली में काफी अच्छे रहे थे और इस वर्ष भी इन जिलों के किसानों में 4201 प्लस को लेकर भारी उत्साह है। इस वर्ष कंपनी सीकर, झुंझुनूं, नागौर में भी अपनी पकड़ मजबूत कर रही है। इन जिलों में कंपनी के कर्मचारी खेतों में जाकर 4201 प्लस की खूबियां किसानों को बता रहे हैं।

हाईटेक सीड का किसान शिक्षा अभियान सम्पन्न

हाईटेक सीड इंडिया प्रा. लि. द्वारा किसानों को खेती की उन्नत तकनीक, कम लागत में ज्यादा पैदावार आदि की जानकारी देने के लिए किसान शिक्षा अभियान चलाया गया। इस अभियान के तहत राजस्थान के झालावाड़, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा आदि जिलों में किसानों को खेती की आधुनिक व उन्नत तकनीक की जानकारी दी तथा कम लागत में ज्यादा पैदावार और मक्के फसल की उचित व्यवस्थापन करने के लिए मार्गदर्शन किया गया। इस अभियान में हाईटेक सीड की तरफ से 'हाईटेक मित्र' किसान का चयन और इन्हीं मित्रों को साथ लेकर अन्य किसान वर्ग तक पहुंचने की पहल शुरू गई है। इस शिक्षा अभियान का लाभ लगभग 500 किसानों को मिला। इस अभियान के माध्यम से कंपनी का प्रमुख उद्देश्य किसानों में 'सहयोग से समृद्धि' लाने का है। हाईटेक सीड की ओर से सुमित पाटील (नेशनल बिजनेस डवलपमेंट मैनेजर), मुरारी लाल मीणा (आरएसएम) और हाईटेक टीम ने किसान भाईयों का मार्गदर्शन किया। यह अभियान करीब 13 राज्यों में चल रहा है और हाईटेक सीड की कोशिश है कि आने वाले समय में यह अभियान और कई जगह से भी चलाने की रहेगी।

एचएफ और साहीवाल गायों से बनी नई पहचान

श्रीगंगानगर (विसं)। पाकिस्तान से आई साहीवाल नस्ल की गायों को लोग पहले कमतर मानते थे, वही साहीवाल नस्ल की गायें पाकिस्तान सीमा से मात्र 4 किलोमीटर और जिले के सुदूर उत्तर में गांव ओड़की के खेतों में बाजवा कृषि फार्म में संगीत सुनने की इतनी अभ्यस्त हो गई हैं कि वे बगैर बछड़े के भी सहजता से दूध दे देती हैं। डेयरी पर संगीत नहीं चलाया जाए तो गायों को पश्माने के लिए मशक्कत करनी पड़ती है। यह कहना है बाजवा डेयरी फार्म संचालक दलजीत सिंह बाजवा का। उन्होंने बताया कि एक बार पशु चिकित्सक के पास एक गोपालक गया, कि उसकी गायों को पता नहीं क्या बीमारी हो गई, अच्छा खाने-पीने के बावजूद दूध घट गया। डॉक्टर ने पड़ताल की, लेकिन कोई उपचार न कर

सका। एक दिन उसने देखा कि गोपालक के घर के पास मंदिर है। उसे तुरंत कान्हा और उनकी गायों का खयाल आया जो बांसुरी की आवाज सुनकर उनके पास आ जाती थीं। उसने पूछा मंदिर में भजन-कीर्तन कब होते हैं, गोपालक ने बताया मंदिर का साउंड सिस्टम खराब है, इसलिए एक सप्ताह से भजन-कीर्तन की आवाज नहीं आ रही। इसके तुरंत बाद मंदिर का लाउडस्पीकर ठीक करवाया गया। धीरे-धीरे गायों का दूध सही पैमाने पर आ गया।

पशुपालकों के लिए वरदान बन सकती है अजोला घास

नागौर (विसं)। दो प्रगतिशील किसानों ने कृषि के क्षेत्र में नई तकनीक अपनाकर अजोला घास की पैदावार की है। प्रदेश में पशुओं की घास का संकट बरसों से है। यहां पहले साल दर साल अकाल पड़ते रहे हैं।

पशुओं को हरा चारा रेगिस्तानी इलाकों में तो मुश्किल से ही मिलता है, लेकिन अब अजोला घास पशुपालकों के लिए वरदान बन रही है। रोल के किसान बालकिशन भाटी व मुकेश भाटी ने सरकारी अनुदान पर अपने खेत में अजोला घास तैयार कर पशुओं के लिए संतुलित आहार का उत्पादन किया है। इससे वे आत्मनिर्भर भी बन गए हैं। दोनों किसान कृषि विभाग की आत्मा योजना के तहत अजोला घास उत्पादन कर पशु व्यवसाय को बढ़ावा दे रहे हैं। दोनों प्रगतिशील किसानों को कृषि क्षेत्र में उन्नत

कार्य करने पर कृषि विभाग की ओर से वर्ष 2017 व 2018 में उत्कृष्ट किसान के सम्मान से नवाजा गया।

ऐसे बनती है अजोला घास: अजोला घास उत्पादन के लिए खेळियां बनाकर पशुओं के गोबर की खाद व मिट्टी से भर देते हैं। अजोला को धूप से सुरक्षित रखने के लिए खेळियों को चारों ओर से नाइनोल नेट से बंद किया जाता है। इस प्रकार तैयार अजोला घास सस्ता, सुपाच्य एवं पौष्टिक पूरक पशु आहार है। अजोला खिलाने से पशुओं में दुग्ध उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है। अजोला खाने वाले पशु सामान्य आहार लेने वाले पशुओं से ज्यादा स्वस्थ होते हैं। उनके दूध में फैट की मात्रा भी ज्यादा होती है।

ये लाभ हैं अजोला घास के

अजोला जंगल में आसानी से उगता है, लेकिन नियंत्रित वातावरण में भी उगाया जा सकता है। इसका बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जा सकता है। खरीफ व रबी दोनों मौसम में इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। यह रासायनिक उर्वरकों के उपयोग की क्षमता को बढ़ाता है। यह धान के सिंचित खेत से वाष्पीकरण की दर कम करता है।

खेतों में बिजाई के लिए आई सीड बॉल की नई तकनीक

जयपुर (कासं)। खेती में विभिन्न तरह के प्रयोग और नवाचार हो रहे हैं। अमेरिका में इस तकनीक का इस्तेमाल हुआ है और बड़े खेतों के साथ वनों में खूबसूरत फूलों वाले पौधों को लगाने के लिए इस तकनीक को काम में लिया जा रहा है। इसी कड़ी में सीड-बॉल जैसी तकनीक भी काम में ली जाने लगी है। बड़े खेतों के लिए उपयोगी इस तकनीक से खेत में जमीन खोदकर बुआई करने के स्थान पर दूर से सीड बॉल को फेंक पर भी बीज डाले जा सकते हैं।

व्यक्तिगत खेत में घूमकर सीड बॉल डालने के अलावा गिलोल या हैलीकॉप्टर से भी इसे छिड़काव की तर्ज डाला जा सकता है। बारिश के मौसम से ठीक पहले डालने से ये सीड बॉल मिट्टी के साथ घुल मिल जाते

उन्नत किस्म के बीज

सीड बॉल तैयार करने के लिए उन्नत किस्म के बीजों का ही इस्तेमाल करना चाहिए। स्थानीय बीजों को भी काम में लिया जा सकता है, लेकिन वे जीवाणु रहित और रोगरोधक होने चाहिए, ताकि कोई शिकायत न रहे।

काली और चिकनी मिट्टी से तैयार होती है सीड बॉल

सीड बॉल तैयार करने के लिए काली और चिकनी मिट्टी को काम में लिया जा सकता है। इसमें कोलीनाइट, स्मेक्टाइट या बेंटोनाइट को मिलाया जा सकता है। इसके अलावा कंपोस्ट खाद को इसमें मिलाया जा सकता है। इसके बाद पोषक तत्वों के बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं होगी। इसमें जरूरत के हिसाब से एक या अधिक बीज डालकर इसे लड्डू की तरह गोल बनाकर सूखने के लिए रख सकते हैं। सूखने पर ये सीड बॉल बन जाती हैं। इसमें एक बार काम में ली गई मिट्टी को दोबारा काम में नहीं लेना चाहिए। इसमें मिट्टी का रंग कुछ भी हो सकता है। वैसे लाल मिट्टी में रेड (ऑक्सीडाइज्ड) ऑयरन ज्यादा होता है। जरूरत के हिसाब से बारिश के मौसम या सर्दियों में भी इसे खेत या जंगल में वनारोपण के लिए डाल सकते हैं।

हैं और इसमें अंकुरण होने लगता है। कुछ समय बाद ये पौध या वृक्ष का रूप भी ले लेते हैं।

फूलवारी के लिए उपयोगी: जंगल को सुनहरा बनाने और उसमें रंगरंगीले फूलों की फुलवारी बनाने के लिए सीड बॉल का इस्तेमाल काफी उपयोगी साबित हुआ है। कुछ स्थानों पर गुलेल से भी इस सीड बॉल को फेंक कर प्रयोग किया गया है, जो सही साबित हुआ है। अमेरिका के जंगलों में आकर्षक फूलों वाले पौधे लगाने के लिए इस विधि का सफल प्रयोग किया जा चुका है। भारत में इसका प्रायोगिक तौर पर कुछ स्थानों पर उपयोग शुरू हुआ है।

किसानों से खरीदी जा रही उपज भण्डारण की व्यवस्था सुनिश्चित

जयपुर। राज्य सरकार द्वारा राजफैड एवं नैफेड के माध्यम से न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना के अन्तर्गत किसानों से खरीद की जा रही उपज के भण्डारण की व्यवस्था सुनिश्चित कर ली गई है तथा भण्डारण व्यवस्था के लिए राजस्थान राज्य भण्डार व्यवस्था निगम को नोडल एजेन्सी बनाया गया है। राजस्थान राज्य भण्डार व्यवस्था निगम के अध्यक्ष जनार्दन सिंह गहलोत ने बताया कि रबी 2018 की फसल के अन्तर्गत राज्य सरकार द्वारा बड़े स्तर पर चना, सरसों व गेहूं की खरीद की जा रही है। मौजूद गोदामों के अतिरिक्त निजी सर्विस प्रोवाइडर्स से लीज विद सर्विसेज् आधार पर भी अस्थाई व्यवस्था की जा रही है। वर्तमान रबी खरीद सीजन 2018 में अब तक लगभग 8.67 लाख मीट्रिक टन चना व सरसों के 1.73 करोड़ कट्टों के भण्डारण की व्यवस्था राजफैड के लिए की जा चुकी है।

अब रोबोट करेगा खेत के हानिकारक कीड़ों को नष्ट

जयपुर (कासं)। खेत में फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कीड़ों को अब रोबोट के जरिए हटाकर नष्ट किया जा सकेगा। इसके लिए सोलर एनर्जी से चलने वाला रोबोट बनाया गया है। मोबाइल फोन से कंट्रोल होने वाले इस रोबोट का वजन मात्र 130 किलो के आसपास है। काम में लेने के बाद इसे एक खेत से दूसरे खेत तक ट्रैक्टर के जरिए आसानी से ले जाया जा सकता है। इस रोबोट में 4 पहिए लगे हैं। इसमें पिछले पहिए इस गाड़ीनुमा रोबोट को आगे बढ़ाते हैं और अगले पहिए परंपरागत तरीके से सीधे चलने या घुमाने के काम आते हैं। इसकी ऊपरी सतह या पीठ पर दो सोलर पैनल लगे हैं, जिनसे यह रोबोट सौर ऊर्जा हासिल करता है। इसमें लगे कैमरे, सैंसर और जीपीएस के जरिए यह काम करता है। कैमरे के जरिए यह कीड़ों को देखता और पहचान करता है, सैंसर की मदद से यह कीड़ों को

पकड़ता है। जीपीएस इसे मोबाइल फोन से जोड़े रखने में सहायता देता है। इंको रोबोटिक्स की वेबसाइट से मिली जानकारी के अनुसार, सोलर पैनल के निचले हिस्से से निकली दो पतली डंडियों में कैमरे और सैंसर लगे होते हैं। इनके जरिए यह फसल की पंक्तियों में से कीड़ों को पहचान कर पकड़ता है। खाली खेत में भी यह रोबोट बुआई करने से पहले कीड़ों को नष्ट करने में सहायक साबित हो सकता है। संचालन के लिए सौर ऊर्जा लेने के मामले में यह रोबोट पूरी तरह से स्वतंत्र है। मौसम थोड़ा बहुत खराब होने का भी इस पर कोई असर नहीं आएगा। यह अपनी स्पीड को कीड़ों पर ध्यान केंद्रित करते हुए रेगुलर रखेगा। इस रोबोट का उपयोग करने के बाद कीटनाशक दवाओं का इस्तेमाल कम हो जाएगा और फसलें पूरी तरह से दवाओं के प्रभाव से मुक्त रहेंगी। अभी यह उपकरण विदेशों में है।

मुख्यमंत्री ने चम्बल-सवाई माधोपुर-नादौती पेयजल परियोजना का किया निरीक्षण

करौली (विसं)। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने करौली जिले के मंडरायल पहुंचकर चम्बल-सवाई माधोपुर-नादौती पेयजल परियोजना का निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि पेयजल की दृष्टि से महत्वपूर्ण इस परियोजना का काम जल्द से जल्द पूरा करें। गंगापुर सिटी में जनसंवाद कार्यक्रम के पश्चात श्रीमती राजे ने इस परियोजना के तहत चम्बल नदी पर बन रहे इन्टेक वेल के कार्यों को देखा। श्रीमती राजे ने निर्देश दिए कि करौली और सवाई माधोपुर जिले के लिए महत्वपूर्ण इस परियोजना से नादौती-गंगापुर एवं करौली को पानी अतिशीघ्र उपलब्ध कराया जाए। मुख्यमंत्री को जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के प्रमुख

सचिव रजत कुमार मिश्र ने निर्माणाधीन इन्टेक वेल सहित परियोजना के अन्य कार्यों की प्रगति की जानकारी दी। जिला कलक्टर अभिमन्यु कुमार ने बताया कि परियोजना से 9 किलोमीटर की दूरी पर स्थित वाटर ट्रीटमेंट प्लांट तक पानी पहुंचा दिया गया है। उन्होंने बताया कि करौली, नादौती एवं गंगापुर तक मीठा पानी शीघ्र पहुंचा दिया जाएगा।

पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक निलम्बित

जयपुर। राज्य सरकार ने एक आदेश जारी कर सवाई माधोपुर में कार्यवाहक संयुक्त निदेशक, पशुपालन विभाग के पद पर कार्यरत डॉ. भगवान लाल गुप्ता को निलम्बित कर दिया है। आदेश के अनुसार निलम्बन काल में उनका मुख्यालय अतिरिक्त निदेशक (क्षेत्र), पशुपालन विभाग भरतपुर के कार्यालय में रहेगा। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने कार्य में लापरवाही बरतने पर गंगापुरसिटी में बामनवास विधानसभा क्षेत्र के जनसंवाद कार्यक्रम के दौरान डॉ. गुप्ता को तत्काल प्रभाव से निलम्बित करने के निर्देश दिए थे, जिसके बाद उप सचिव, पशुपालन विभाग ने तुरन्त प्रभाव से डॉ. गुप्ता के निलम्बन के आदेश जारी कर दिए।

किसानों को तत्परता से अतिरिक्त नया फसली ऋण वितरण करें: गुप्ता

जयपुर (कासं)। मुख्य सचिव डॉ. बी. बी. गुप्ता ने कहा है कि किसानों को अतिरिक्त नया फसली ऋण वितरण तत्परता से किया जाये। ऋण माफी शिविरों में किसानों को दिये जाने वाले ऋण माफी प्रमाण पत्र वितरण के दौरान ही किसानों से आवेदन लेकर अतिरिक्त नये ऋण को स्वीकृत करने की प्रक्रिया में शीघ्रता रखें। गुप्ता शासन सचिवालय स्थित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कक्ष से सभी जिला कलक्टर एवं केन्द्रीय सहकारी बैंकों के प्रबंध निदेशकों से संवाद कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पैसे की कमी नहीं है और राज्य सरकार इसके लिये प्रतिबद्ध है। मुख्य सचिव ने कहा कि राज्य में समर्थन मूल्य पर सरसों, चना एवं गेहूं की खरीद जारी है। उन्होंने बताया कि पूर्व में हुई दलहन एवं तिलहन की खरीद के कारण आरएसडब्लूसी के भण्डार में उपज रखी हुई है तथा अभी चल रही खरीद को देखते

हुए 3 लाख मैट्रिक टन भण्डारण की अतिरिक्त विशेष व्यवस्था की गई है। उन्होंने आश्वस्त किया कि भण्डारण को लेकर किसी प्रकार की परेशानी नहीं होने दी जायेगी। उन्होंने निर्देश दिये कि संबंधित क्षेत्रों में खरीदी गई उपज का सुरक्षित भण्डारण सुनिश्चित करें। उन्होंने सभी जिला कलक्टर को कहा कि यह सुनिश्चित करें कि वे सप्ताह में दो दिन फील्ड में प्रवास पर रहें। प्रमुख शासन सचिव, सहकारिता अभय कुमार ने बताया कि सरसों, चना, गेहूं एवं लहसुन की अब तक लगभग लगभग 4 हजार करोड़ रुपये की 10 लाख मैट्रिक टन खरीद हो चुकी है। उन्होंने बताया कि सरवाड़, बकानी, उनियारा एवं बीकानेर क्षेत्र में उपज की गुणवत्ता को लेकर कुछ समस्या आ रही है इस संबंध में संबंधित जिला कलक्टर इसको व्यक्तिगत रूप से देखते हुए हल करें।

2 जुलाई से होगा अन्नपूर्णा दूध योजना का शुभारंभ

जयपुर। मिड डे मील योजनान्तर्गत प्रदेश के प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अन्नपूर्णा दूध योजना के तहत पंचायत क्षेत्र के पंजीत महिला दुग्ध समितियों के माध्यम से दूध वितरित किया जाएगा। योजना का शुभारंभ 2 जुलाई को मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे करेंगी। राज्य के विद्यालयों, मदरसों, स्पेशल ट्रेनिंग सेंटर्स में अध्ययनरत कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों को सप्ताह में 3 दिन उच्च गुणवत्तापूर्ण, गर्म, ताजा दूध उपलब्ध करवाया जाएगा। शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को तथा ग्रामीण क्षेत्र में सोमवार, बुधवार और शुक्रवार अथवा मंगलवार, गुरुवार और शनिवार को प्रत्येक विद्यालय में तीन दिवस दूध पोषाहार दिया जाएगा।

देशी बाजरे की बुआई के लिए 15 से 30 जून की अवधि उपयुक्त

सीकर। खरीफ की खेती में किसान लंबी अवधि में पकाव वाली फसलों की देशी किस्मों का अच्छा उत्पादन ले सकते हैं। इसके लिए किसानों को बारिश से पहले ही खेतों की जुताई करनी होगी। साथ ही 20 से 25 एमएम बारिश बारिश होते ही बाजरा, मूंगफली, ग्वार व मूंग की अगेती बुआई करनी होगी। देशी बाजरे की बुआई के लिए भी 15 से 30 जून तक की अवधि को उपयुक्त माना गया है। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार, खरीफ सीजन में देशी बाजरा, ग्वार व मूंगफली आदि फसलों की अगेती बुआई कर अच्छी पैदावार ले सकते हैं। मानसून पूर्व की बारिश में बुआई के बाद खेतों में अंकुरित हुई फसलों के लिए मानसून भी कारगर साबित होगा। अगेती बुआई में किसानों के लिए 85 से 90 दिन में तैयार होने वाली देशी किस्मों के बीज का उपयोग ही फायदेमंद रहेगा।

खरपतवार का दबाव भी कम रहेगा: कृषि अनुसंधान अधिकारी हरदेवसिंह बाजिया के अनुसार, मानसून पूर्व की पहली बारिश में खेतों में फसलों की बुआई करने से खरपतवार की समस्या भी नहीं रहेगी। इससे किसानों को अच्छी पैदावार भी मिल सकती है, क्योंकि खरपतवार से पहले ही फसलों में बढ़वार आ जाएगी। इस कारण खरपतवार ठीक से पनप नहीं पाएगी।

एक और कृषि महाविद्यालय खुला

भीलवाड़ा (विसं)। कृषि क्षेत्र में पढ़ाई की रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को अब निजी क्षेत्र में भी विकल्प मिल गए है। राजकीय कृषि महाविद्यालय के बाद अब संगम यूनिवर्सिटी ने भी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर शुरू किया है। संगम यूनिवर्सिटी के प्रेसीडेंट प्रोफेसर केपी यादव ने बताया कि संगम यूनिवर्सिटी भीलवाड़ा में कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर शुरू किया है। इसमें जिले के विद्यार्थी जो कृषि में स्कूली शिक्षा लेकर उच्च शिक्षा के लिए बाहर जाना पड़ता था। अब यह सुविधा यहां पर मिलेगी। साथ ही चार वर्षीय बीएससी कृषि पाठ्यक्रम प्रारंभ किया है। एक वर्षीय रोजगरउन्मुखी डिप्लोमा, पादप संरक्षण एवं कीटनाशी प्रबंधन कार्यक्रम शुरू किया है। कीटनाशी व्यवसाय एवम वितरण से सम्बन्धित व्यापार के लिए सरकार की ओर से इस डिप्लोमा की अनिवार्यता है।

Hindchem Corproation

SUPPER POTASSIUM HUMATE SHINY FLAKES

ZINK EDTA

SEAWEED EXTRACT FLACKES

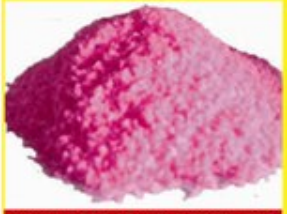

N.P.K. WATER SOLUBLE FERTILIZER

AMINO ACID

AMINO+HUMIC SHINY BALLS
FERROUS SULPHATE19%
MAGNESIUM SULPHATE 9.6%
FERROUS EDTA12%
E.D.T.A. ACID
CAMPHOR
SODIUM BICARBONATE
EDTA DISODIUM
CITRIC ACID MONOHYDRATE
MANGANESE SULPHATE 30.5%
SULPHUR 90% -80WDG
BORON 20%
BRONOPOL 25%
PHOSPHORIC ACID

We Welcome Your Valuable Inquiry
Tel. 022-66998360/61
Fax-022-66450908
Email id: mamta@hindchem.com
Mo. 9004744077

कपास की फसल में रस चूसने वाले कीड़ों से बचाव जरूरी

अलवर (विसं)। कपास की फसल में कीड़ों से बचाव करना जरूरी है। इसमें मिलीबग की रोकथाम के लिए चींटियों पर नियंत्रण करना आवश्यक है क्योंकि मिलीबग चींटियों की सहायता से एक से दूसरे खेत में प्रवेश कर जाती हैं। इसके लिए खेत के चारों ओर अवरोधक का घेरा बनाएं और क्यूनालफॉस पाउडर का प्रयोग करें। भूमि में तैयार किए गए चींटियों के बिलों को नष्ट कर दें। खेत में ग्रसित फसलों के अवशेषों को एकत्र कर जला दें। खेत में और खेत के चारों और उगे खरपतवारों को नष्ट कर दें। उन्हें नहरों या खालों में ना डालें। मिलीबग से ग्रसित खेत में काम में लिए गए औजारों को सफाई करके ही दूसरे खेतों में लेकर जाएं। फसल के चारों तरफ

बाजरा, मक्का व ज्वार को दो-दो कतार में बोएं। कीटनाशक रसायनों का छिड़काव पौधों के तने व ऊपरी भाग पर अच्छी तरह से करें और दूसरा छिड़काव जल्दी ही दोहराएं। खेत में मिलीबग दिखाई देने पर क्यूनालफॉस 25 ईसी 2 मिलीलीटर पानी या ट्राईजोफॉस 40 ईसी एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

कीटनाशक छिड़कते समय बरतें सावधानी: कीटनाशकों के इस्तेमाल के दौरान किसानों, मजदूरों के साथ पशुओं के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए कीटनाशक की पैकिंग पर तारीख देखकर ही खरीदें। कीटनाशक को मूल कंटेनर से दूसरे कंटेनर में ना डालें।

आधुनिक खेती को कम्प्यूटर से मिली नई पहचान

कृषि में कम्प्यूटर और कृषि संबंधित उद्योगों में विभिन्न समस्याओं को हल करने के लिए कम्प्यूटर हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और नियंत्रण प्रणाली के विकास और अनुप्रयोग में प्रगति की आधारशिला प्रदान कराता हैं। इनमें कृषि विज्ञान, बागवानी, वानिकी, जलीय कृषि, पशु विज्ञान, पशु चिकित्सा दवा, और खाद्य प्रसंस्करण शामिल हैं। उपरोक्त उद्योगों के किसी भी पहलू से संबंधित कम्प्यूटरीकृत निर्णय-सहायता (उदाहरण के लिए, विशेषज्ञ प्रणालियों और सिमुलेशन मॉडल) सहित विषयों पर मूल पत्र, समीक्षा, अनुप्रयोग नोट्स और पुस्तक समीक्षा प्रदान करता हैं। कम्प्यूटर और उनके अनुप्रयोगों ने कृषि सहित अधिकांश पारंपरिक व्यवसायों का रूपांतरण कर दिया हैं। कम्प्यूटरीत दूध संग्रह और बीज अनुमानकों से मौसम की भविष्यवाणियों और स्वचालित कृषि भूमि मूल्यांकन के लिए, कम्प्यूटर ने कृषि प्रथाओं में क्रांतिकारी बदलाव किया है। तकनीकी प्रगति ने कृषि और पशुपालन में कठोर परिवर्तन लाए हैं जिसके परिणाम स्वरूप उत्पादन क्षमता में भारी वृद्धि हुई है। पारंपरिक खेती, मशीनरी और अन्य उपकरणों में मानव प्रयास और हस्तक्षेप की जगह कम्प्यूटर का उपयोग किया जाने लगा है। अगर कम्प्यूटर ने खेती के तरीकों को बदल दिया है, तो इंटरनेट ने उसकी गति को दोगुना कर दिया है।

कृषि में कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी के अनुप्रयोग

कृषि के विकास ने कई मुख्य चरणों का अनुभव किया है जिसमें आदिम कृषि मंच, पारंपरिक कृषि मंच और आधुनिक कृषि मंच है । पत्थर के पात्रों द्वारा कुछ आसान काम उपक्रम करना प्राचीन कृषि के मुख्य पात्रों में से एक है। पारंपरिक कृषि चरण के दौरान, मनुष्यों ने लोहे के बने पदार्थ का आविष्कार किया और लौह और लकड़ी से बने उपकरणों का उपयोग करना शुरू कर दिया जिससे उत्पादकता में काफी सुधार हुआ था। आधुनिक कृषि मंच के दौरान, उन्नत कृषि मशीनों का उपयोग किया गया और कृषि अर्थव्यवस्था ने बड़ी प्रगति की। आज के समय में, कृषि केवल फसल उत्पादन या पशुधन खेती और संबंधित गतिविधियों के बारे में ही नहीं है। कृषि को प्रभावित करने वाली पर्यावरण परिस्थियाँ चुनौतियों को जन्म देती है इसलिए किसी भी तरह की कृषि गतिविधी के लिए एक आधुनिक और वैज्ञानिक विचारधारा होनी चाहिए। जैसे जलवायु परिवर्तन के कारण किसानों को पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने की जरूरत है और यही वह जगह है जहां आधुनिक तकनीक बचाव के लिए आती है। कृषि में कम्प्यूटर के उपयोगों में निम्नलिखित शामिल है

▷ऐसे सॉफ्टवेयर जो मौसम की स्थिति की भविष्यवाणी और कृषि उत्पादन के आकलन में मदद करते हैं।

▷कम्प्यूटर का उपयोग उत्पादन, परिवहन, कृषि प्रक्रियाओं, और लाभ और हानि के आकलन और गणना में शामिल लागत से संबंधित जानकारी के रिकॉर्ड रखने के लिए किया जाता है।

▷इंटरनेट संचार किसानों और कृषि विशेषज्ञों के बीच महत्वपूर्ण माध्यम बनता जा रहा है इससे ज्ञान का आदान-प्रदान होता है और किसानों के उत्पादन में सुधार और मुनाफा कमाने के लिए मार्गदर्शन के रूप में कार्य करता है।

▷सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी के उपयोग से उन खेतों में खेती की प्रथा विकसित हुई है जिन्हें कम प्रयास की आवश्यकता होती है और अधिक उत्पादन की ओर अग्रसर है।

▷मशीनीकरण ने मानव और पशु प्रयास को कम कर दिया है और उत्पादन की गति और गुणवत्ता में वृद्धि की है।

फार्म लैंड आकलन

भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) का उपयोग रैंकिंग सिस्टम विकसित करने के लिए किया जा रहा है जो भूमिका मूल्यांकन करते हैं और अब सटीक कृषि के रूप में की जाने वाली सहायता के लिए साइट मूल्यांकन प्रदान करते हैं। ये उच्च तकनीकों आधारित इंटरेक्टिव सिस्टम विभिन्न प्रकार के कारकों जैसे मिट्टी की स्थिति, जलनिकासी और ढलान की स्थिति, मिट्टी पीएच और पोषक तत्वों की स्थिति आदि के आधार पर जानकारी प्रदान करते हैं।

▷इन प्रणालियों के उपयोग से पहले, किसानो को अक्सर मिट्टी के उत्पादन के बारे में, और फसल की गुणवत्ता और लाभ प्रदता को प्रभावित करने वाली अप्रत्याशित मौसम की स्थिति की बारे में जानकारी नहीं होती थी

▷प्रेसिजन खेती, किसानों को भविष्यवाणी के जरिए उर्वरक आवेदन और जल निकासी, कीड़े और घास के साथ की समस्याओं के नियंत्रण में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। ज्यादातर सरकारी वेबसाइटें इस तरह की जानकारी को निरू शुल्क प्रदान करती हैं ।

▷ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) आधारित प्रौद्योगिकियां सिंचाई, फील्ड मैपिंग, मिट्टी के नमूने, ट्रैक्टर मार्ग दर्शन और फसल स्काउटिंग की निगरानी करने में भी मदद करती हैं। इस प्रकार की तकनीक फसल उपज को बढ़ाने के ऐसे तरीको पर्याप्त जानकारी प्रदान करती है जो स्थायी कृषि के लिए सर्वोत्तम पर्यावरणीय प्रथाओं के अनुरूप हैं।

स्वायत्त फार्म उपकरण और ट्रैक्टर

स्वचालित कृषि उपकरण, स्थिरता और विश्वसनीयता के संदर्भ में मानव नियंत्रित उपकरणों से बेहतर परिणाम देने में सक्षम है । ट्रांसमिशन और हाइड्रोलिक पावर आउटपुट जैसे इंजिन और मशीन फंक्शंस उपकरण में बने माइक्रोचिप्स का उपयोग कर नियंत्रित होते हैं। फसल बीजिंग और उर्वरक आवेदन की सहायता के लिए स्व-चालित उपकरणों में मार्गदर्शन तकनीक का व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है।

▷20 वीं शताब्दी के बाद से स्वचालित प्रणाली, कम्प्यूटरीकृत दुग्ध संग्रह और दुहनी मशीनों के चलते, डेयरी उद्योग के साथ-साथ पशुधन उत्पादन के लिए बेहतर आर्थिक उपज बन गया। भारत की भविष्य कृषि के लिए स्वचालित ट्रैक्टर का उपयोग निराई , गुड़ाई आदि कृषि कार्यो के लिए भी किया जाने लगेगा ।

फार्म सॉफ्टवेयर

जानवरों के खेती के संबंध में, तैयार किए गए कंप्यूटर अनुप्रयोग जानवरों को ट्रैक करने, उम्र, स्वास्थ्य रिकॉर्ड, दूध उत्पादन, उत्पादकता और प्रजनन चक्र की स्थिति जैसी जानकारी का मूल्यांकन करने के लिए उपयोगी हैं। इसी तरह, कृषि में अधिकांश कृषि लेखांकन सॉफ्टवेयर और अन्य कंप्यूटर अनुप्रयोग रिकॉर्ड रखने के लिए सेवाएं प्रदान करते हैं, उस डेटा का उपयोग करके पूर्वानुमान-आधारित मॉडल का अनुकरण, और राजस्व और उत्पादकता का अनुमानित परिणाम देती है। अधिकांश कृषि सॉफ्टवेयर विक्रेता आपको अपने खेतों या खेत की विशिष्ट आवश्यकताओं के लिए अपने अनुप्रयोगों के उपयोग करने का विकल्प प्रदान करते हैं।

इंटरनेट मंच, सोशल नेटवर्किंग और ऑनलाइन ज्ञान के आधार

दुनिया में कोई भी व्यवसाय इंटरनेट और संबंधित संचार प्रौद्योगिकियों (मोबाइल कंप्यूटिंग, ई-कॉमर्स इत्यादि) के आगमन और वैश्विक पहुंच से लाभान्वित हुआ है। कृषि अलग नहीं है। दुनिया भर में फैले किसानों, कृषि वैज्ञानिकों और अन्य विशेषज्ञों से जुड़ने के लिए इंटरनेट की शक्ति का उपयोग करने की कल्पना आज साकार रूप लेती दिख रही है ।

▷इंटरनेट पर कई मंच और सोशल नेटवर्किंग साइटें हैं जहां किसान अन्य किसानों और कृषि विशेषज्ञों के साथ जुड़ सकते हैं और जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा कृषको के लिए सीखने के कई भंडार हैं जो विभिन्न प्रकार के कृषि विषयों पर जानकारी प्रदान करते हैं। ये रास्ते ग्रामीण डिजिटल डिवाइड को उपयोग करने, सार्वजनिक नीतियों को प्रभावित करने और कृषि मूल्य श्रृंखला में सभी हित धारकों से जुड़ते हैं। उदाहरण के लिए, एक किसान आसानी से एक कृषि उद्यमी से संपर्क कर सकता है और विचारों या व्यावसायिक प्रस्तावों का आदान-प्रदान शुरू कर सकता है। दुनिया के किसी भी भाग में अनाज और पशुधन, कीटसंबंधी जानकारी, वास्तविक समय की मौसम की जानकारी (वर्षा, तापमान, आर्द्रता, सौरविकिरण, हवा की गति, मिट्टी की नमी और मिट्टी का तापमान) की कीमत की समीक्षा जैसे कि किसी के उंगलियों पर सचमुच उपलब्ध है। ऐसा सुचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से समभाव हुआ है ।

डिजिटल कृषि की आवश्यकता और लक्ष्य

वर्तमान कृषि सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी), जैव प्रौद्योगिकी (बीटी), पर्यावरण प्रौद्योगिकी (ईटी), और नैनो प्रौद्योगिकी (एनटी) जैसी प्रौद्योगिकियों के साथ मिल गई है और यह मुख्य रूप से उत्पादन स्तर के दौरान लागत में कमी, श्रम बोझ में कमी, उच्च गुणवत्ता और जैविक उत्पादन, और सुविधा में गुणवत्ता प्रबंधन जैसे क्षेत्रों पर केंद्रित है। दूसरा, एक प्रणाली के निर्माण के माध्यम से उत्पादन और वितरण चरणों में उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करना महत्वपूर्ण है, जो खाद्य सुरक्षा सूचना प्रदान करता है। आईटी लागू करके, जो डिजिटल कृषि का हिस्सा है, इसे पशुधन और नियंत्रित विकास पर्यावरण निगरानी और नियंत्रण प्रणाली के साथ उत्पादन चरण में हासिल किया जा सकता है। इसका मतलब है, कृषि खेती स्वचालन प्रणाली में आईटी अनुप्रयोगों का विस्तार किया जाना चाहिए। इसके अलावा, वितरण और प्रसंस्करण चरणों में, आईटी का उपयोग कर उन्नत वितरण प्रौद्योगिकियों को वितरण डेटा के अभिसरण समेत पेश करने की आवश्यकता है। ये डिजिटल कृषि प्रणाली के बहुत छोटे हिस्से हैं जो पूरे कृषि तंत्र का बड़ा डेटा बेस बनाने का हिस्सा हैं।

ई- कृषि

कृषि पद्धतियों के एक उभरते हुए क्षेत्र, ई-कृषि, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, स्थायी कृषि विकास और खाद्य सुरक्षा मानकों के लिए मौजूदा सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों (आईसीटी) का उपयोग करने के लिए नवीनतरी के और सर्वोत्तम अभ्यासों के साथ आने पर केंद्रित है। ई-कृषि में कृषि संबंधी सूचना विज्ञान, कृषि विकास और व्यवसाय जैसे अन्य संबंधित तकनीकी क्षेत्र भी शामिल हैं। इसका उद्देश्य किसानों के सशक्तिकरण और खाद्य मूल्य श्रृंखला में साझेदारी को सुदृढ़ करने के लिए सभी उपलब्ध प्रौद्योगिकियों (कम्प्यूटर, मोबाइल कंप्यूटिंग, उपग्रह प्रणाली, स्मार्टकार्ड) को तैनात करना है।

डेटाबेस सॉफ्टवेयर और रेडियो फ्रीक्वेंसी पहचान टैग का उपयोग करने वाले पशुधन प्रबंधन और ट्रैकिंग प्रौद्योगिकों की भी समीक्षा की जाती है। कृषि में कंप्यूटरों के उपयोग में कुछ वास्तविक बाधाएं होती हैं जैसे हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर अवसंरचना, प्रशिक्षण और कौशल और शोध प्राथमिकताओं की कमी। हालांकि, इन्हें खत्म करने के बाद, कंप्यूटर का उपयोग पिछले स्वचालन और सॉफ्टवेयर अनुप्रयोग से चल जाता है। ई-कृषि को न केवल संयुक्त राज्य में, बल्कि दुनिया के अन्य विकासशील और उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में भी समृद्धि लाने के लिए महत्वपूर्ण माना जा सकता है। खेती, रोपण, निषेचन, कीट नियंत्रण और कटाई की सटीकता में सुधार होने पर एक खेती के संचालन में फसलों का अधिक उत्पादन हो सकता है। यह स्वाभाविक रूप से तर्कसंगत लग सकता है, लेकिन सुधार प्रक्रिया से निपटना कृषि उपकरण डिजाइनरों के साथ-साथ कंप्यूटर एप्लिकेशन डेवलपर्स के लिए एक जटिल चुनौती है। इसे विभिन्न प्रकार के कृषि उपकरणों के लिए कंप्यूटर, इंटरनेट नेटवर्क, जीपीएस, जीआईएस, और प्रोग्राम करने योग्य नियंत्रण और सेंसर जैसी कई नई प्रौद्योगिकियों के अनुकूलन की भी आवश्यकता है।

निष्कर्ष: कृषि क्षेत्र में हो रहे विकास को धरातल पर लाने के लिए कम्प्यूटर का ज्ञान व उपयोग महत्वपूर्ण रहा है कम्प्यूटर के उपयोग से कृषक, वैज्ञानिको से सम्पर्क कर अपनी समस्याओ का निवारण कर सकते है मौसम जानकारी, बुवाई व कटाई का उपुक्त समय, किट प्रकोप की जानकारी इंटरनेट के माध्यम से ले सकते है जब से कम्प्यूटर की पहुंच ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंची है तब से किसानो को उन्नति की राह मिल गयी है।

बीजोपचार व कीटनाशकों के सुरक्षित उपयोग पर प्रशिक्षण

(झाड़ोल) उदयपुर। कृषि विज्ञान केन्द्र, बड़गाँव, द्वारा गाँव सुलाव (झाड़ोल) उदयपुर में एक दिवसीय प्रशिक्षण 14 जून 2018 को बीजोपचार व कीटनाशकों के सुरक्षित उपयोग पर रखा गया जिसमें 70 महिला व पुरूष कृषकों ने भाग लिया। संस्था की ओर से डॉ. दीपक जैन (विषय विशेषज्ञ, पौध संरक्षण) ने बताया कि आजकल बाजार में अधिकाशतया: नकली एवं निम्न श्रेणी के रसायन (पेस्टीसाइड्स) सस्ती दरों पर उपलब्ध है जिनके अर्धाधुध एवं अविवेकपूर्ण प्रयोग/छिड़काव से न तो लक्षित कीटो की रोकथाम हो पा रही है अपितु इसके भयावह परिणाम सामने आ रहे है, खासकर कीटों के परजीवी एवं परभक्षी (लाभदायक कीट) नष्ट हो रहे है, पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। फसल लागत बढ़ रही है, मनुष्य में केंसर व अन्य बीमारियां विकराल रूप ले रही है, कीटों में कीटनाशकों के प्रति सहनशीलता बढ़ रही है, व गौण (माइनर) कीट, मुख्य (मेजर) कीटों में बदल रहे है आदि। इस हेतु किसानो को चाहिये कि वो उच्च श्रेणी के रसायनों का का विवेकतापूर्ण आर्थिक हानि स्तर के बाद, सही मात्रा, सही समय पर ही प्रयोग करे ।

डॉ. जैन ने बताया कि बाजार में उपलब्ध जैविक कीटनाशकों का भी प्रयोग करना चाहिये उसके बाद ही रसायनो का प्रयोग करे, तथा प्रत्येक कीटनाशक की हर फसल के लिए प्रतिक्षावधि (वेटिंग पिरियड) होती है, उसके बाद ही फसल उत्पाद को उपभोग में लेवें। प्रशिक्षण मे कीटनाशको के सुरक्षित उपयोग पर विस्तृत चर्चा की खासकर कीटनाशको की खरीद के दौरान क्या सावधानियां रखें, कीटनाशको के घोल तैयार करते समय सावधानियां, कीटनाशको के संग्रहण, प्रबंधन के दौरान क्या करे, कीटनाशी उपकरणों के चयन, छिड़काव करते समय क्या-क्या सावधानिया, छिडकाव के बाद क्या करें और यदि कीटनाशको से विषाक्तता हो जाये तो उससे बचाव के उपाय बताया व बाजार में उपलब्ध श्रेणीवार कीटनाशकों पर भी चर्चा हुई। अभी खरीफफसलों की बुवाई का समय आ गया है अत: फफूंदजनित रोगों, भूमिगत कीडो से बचाव व कल्चर का प्रयोग बीजो में किस प्रकार क्रमानुसार खासकर फफीरा (फफूंदनाशक, कीटनाशक व राजोबियम कल्चर) से किया जावे इसकी प्रायोगिक विधि बतायी गई है। इस अवसर पर हसमुख गहलोत, (विषय विशेषज्ञ अभियांत्रिकी) ने अपने विचार व्यक्त किये तथा नवीन तकनीकी द्वारा बुवाई एवं छिड़काव के बारे में बताया। बहादूर सिंह (फार्म मैनेजर) ने मिट्टी परीक्षण व उड़द की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तृत बताया। सभी किसानों को 20 हैक्टर क्षेत्रफल बुवाई के लिए उड़द (पीयू-31) के बीजो का वितरण किया गया। कार्यक्रम में गांव के सक्रिय नागरिक रतन सिंह, नाहर सिंह, नाथू सिंह एवं धरम सिंह आदि उपस्थित थे।

भेड निष्क्रमण के समय पशुपालकों को मौके पर योजनाओं का लाभ प्रदान करें: संभागीय आयुक्त

कोटा (विसं)। भेड निष्क्रमण के दौरान कानून व्यवस्था एवं पशुपालकों को आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु तैयारियों की समीक्षा बैठक कोटा संभागीय आयुक्त केसी वर्मा की अध्यक्षता में सीएडी सभागार में आयोजित की गई। जिसमें पशुपालक कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष गोवर्धन रायका, उपाध्यक्ष भूपेन्द्र देवासी सहित संभाग के जिला कलक्टर, पुलिस अधीक्षक एवं संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे। संभागीय आयुक्त ने कहा कि भेड निष्क्रमण के दौरान सभी जिलों में अधिकारी आपसी समन्वय से कार्य करते हुये पशुपालकों को सरकार द्वारा देय सुविधाओं को समय पर उपलब्ध कराकर कानून व्यवस्था संबंधित समस्याओं का समय पर निराकरण करें। उन्होंने कहा कि भेड निष्क्रमण के समय बनाई जाने वाली चैक पोस्टों पर संवदेनशील कार्मिकों को नियुक्त कर मौके पर ही विभिन्न योजनाओं की जानकारी देकर आवश्यक दस्तावेजी जानकारी एकत्रित कर ली जाये। उन्होंने प्रत्येक जिले में नियंत्रण कक्ष की स्थापना करने एवं एक जुलाई से 31 अक्टूबर तक 24 घंटे कार्यशील रखने के निर्देश दिये। गतवर्ष भेड निष्क्रमण के समय आई हुई समस्याओं को सूचीबद्ध कर उनका समय पूर्व निस्तारण करना सुनिश्चित करें। पशुपालकों को खाद्य नागरिक आपूर्ति विभाग डेरों की संख्या लेकर सरकार द्वारा देय राशन सामग्री का पारदर्शिता से वितरण कराये एवं आवश्यकता पडने पर वैकल्पिक व्यवस्था भी रखें। उन्होंने शिक्षा विभाग के अधिकारियों को अलग-अलग क्षेत्रों में पशुपालकों के बच्चों की पढ़ाई के लिए चल शिक्षण केन्द्र स्थापित कर शिक्षकों की नियुक्ति करने एवं सभी बच्चों को शिक्षा दिलाने के निर्देश दिये। उन्होंने भेड निष्क्रमण के दौरान जिलों में वन क्षेत्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में आवागमन के दौरान आने वाली समस्याओं को दूर करने हेतु चैक पोस्टों पर रूटचार्ट के बारे में जानकारी देने एवं आवश्यकता पडने पर पुलिस सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। अध्यक्ष पशुपालक कल्याण बोर्ड ने कहा कि सरकार ने पशुपालकों के लिए अनके कल्याणकारी योजनाएं लागू की है।

लुप्त होती फसलों को बचाएगा मण्डोर कृषि विश्वविद्यालय

जोधपुर (कासं)। बाजरी, जीरा, मूंग, मोठ, तिल व स्थानीय स्तर की फसलों की लुप्त होती किस्मों को अब कृषि विश्वविद्यालय संरक्षित करेगा। जी हां, मण्डोर स्थित कृषि विश्वविद्यालय को स्थानीय फसलों के संरक्षण व शोध कार्य के लिए इंटरनेशनल प्रोजेक्ट मिला है। रोम स्थित इंटरनेशनल बायोडायवर्सिटी बोर्ड व ग्लोबल एनवॉयरमेंट फैसिलिटी (जेफ) की ओर से विवि को यह प्रोजेक्ट मिला है। विवि को अन्तरराष्ट्रीय स्तर का यह पहला प्रोजेक्ट मिला है। प्रदेश में संचालित हो रहे 5 कृषि विवि में अन्तरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट हासिल करने वाला यह प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय है।

तीन जिले शामिल: प्रोजेक्ट में तीन जिलों जोधपुर, बाड़मेर व जैसलमेर को शामिल किया गया है। विवि जोधपुर जिले के ओसिया के गोविन्दपुरा व मानसागर तथा बाड़मेर के चौहटन के धीरासर व धोख गांव में कार्य करेगा। जोधपुर काजरी को भी प्रोजेक्ट मिला है, जो जैसलमेर जिले में कार्य करेगी।

डेढ़ करोड़ का फण्ड: पांच वर्षीय प्रोजेक्ट के लिए विवि को करीब डेढ़ करोड़ का फण्ड मिलेगा । विवि चयनित जिलों में बाजरी, जीरा, मूंग, मोठ, तिल, अश्वगंधा, मैथी, मेहंदी व अन्य स्थानीय स्तर की फसलों के संरक्षण को लेकर कार्य होगा। साथ ही, किसानों को लुप्त हो रही फसलों के संरक्षण के साथ उनकी नई वैरायटी पैदा करने, उच्च तकनीकी इस्तेमाल करने की जानकारी दी जाएगी, ताकि उत्पादकता, उत्पादन व किसान का सामाजिक स्तर बढ़े। इसके अलावा, बीज भण्डारण के लिए सामुदायिक उन्नत बीज बैंक की व्यवस्था की जाएगी।

इनका कहना है : जुलाई में इंटरनेशनल बायोडायवर्सिटी बोर्ड व जेफ की मीटिंग में प्रोजेक्ट की घोषणा हुई थी। फण्ड मिलने के बाद अब कार्य शुरू हो गया है। कृषि से जुड़े अन्तरराष्ट्रीय विशेषज्ञ समय-समय पर वर्कशॉप्स आयोजित कर विवि के वैज्ञानिकों को तकनीकी हस्तांतरण करेंगे।

डॉ. बलराज सिंह, कुलपति कृषि विवि

कृषि सलाह किसान भाई ध्यान देवें

मूंगफली: वर्षा के समय बोई जाने वाली मूंगफली को सफेद लट से बचाने के लिये 80 किलो बीज (गुली) को 160 ग्रॉम क्लोथिएनिडीन 50 डब्ल्यू.डी.जी. अथवा 240 मि.ली. इमिडाक्सलोप्रिड 17.8 एस.एल. अथवा 2 लीटर क्यूनालफॉस 25 ई.सी.. से उपचारित करें । उपचार करने के लिये निश्चित मात्रा मे बीज को ड्रम अथवा मटके मे लेवें तथा सिफारिश अनुसार कीटनाशी दवा डालकर इस तरह हिलाये कि बीज पर कीटनाशी की परत जम जाये । उपचारित बीज को छाया में प्लास्टिक या सीमेन्ट के फर्श पर 2-3 घण्टे तक सुखावें । इसके तुरन्त बाद बुवाई कर देवें। उपचारित बीज को 2-3 घण्टे से अधिक समय पर बुवाई करने से अंकुरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

खरीफ की बारानी फसलों जैसे बाजरा, ज्वार, मक्का, ग्वार, मूंगफली, मूंग, मोठ: खरीफ की बारानी फसलों जैसे बाजरा, ज्वार, मक्का, ग्वार, तिल, अरण्डी, मूंगफली, मूंग, मोठ इत्यादि की बुवाई हेतु आवश्यक आदानों जैसे बीज, उर्वरक, रसायनों की अग्रिम व्यवस्था कर लेवे। वर्षा होते ही इन फसलो की समय पर बुवाई की जा सके।

फलदार पौधे: फलदार पौधों को लगाने के इच्छुक कृषक 1×1×1 मीटर आकार के गड्ढे खोद कर 10-15 दिन तक खुला छोड देवें । प्रति गड्ढे के हिसाब से 15-20 किलो गोबर की खाद मिला देवें । पौधे लगाने से पूर्व 100 ग्राम क्यूनालफॉस 15 प्रतिशत चूर्ण प्रति गड्ढे के हिसाब से मिला देवें । विश्वसनीय जगह से ही उन्नत किस्मों के फलदार पौधे खरीदें ।

टमाटर: टमाटर की फसल में झुलसा (ब्लाईट) के प्रकोप से पत्तियों पर गहरे भूरे रंग के प्रारम्भिक लक्षण दिखाई देते है । इस रोग के नियंत्रण हेतु रोग के प्रारम्भिक लक्षण दिखाई देते ही मैन्कोजेब 2 ग्राम या कॉपर आक्सीक्लोराइड का 3 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।

सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नाम : .....

संस्था का नाम : .....

पूरा पता : .....

ग्राम : .....तहसील .....

जिला ..... राज्य ..... पिन कोड

दूरभाष कार्य : ..... निवास .....

सदस्यता राशि

एक वर्ष : 151 ☐ तीन वर्ष 351 ☐ पांच वर्ष 501 ☐

कृपया हमें/मुझे सृष्टि एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें।

सदस्यता राशि नकद/मनीऑर्डर/चेक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में) शब्दों में .....

बैंक का नाम ..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक ..... दिनांक .....

स्थान ..... प्रतिनिधि का नाम ..... हस्ताक्षर सदस्य .....

दिनांक .....

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का सम्पूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड मालाड (प), मुंबई-400064 Tel. 022-66998360/61, Fax : 022-66450908,
E-mail : info@srushtiagronews.com, website : www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर

एवं संस्था सील

गौशालाओं में 2500 घनमीटर के बनेंगे बायोगैस प्लांट: किलक

वर्ष में एक लाख मैट्रिक टन तैयार होगी जैविक खाद

जयपुर (कासं)। प्रदेश की 25 गौशालाओं में 100 घनमीटर से अधिक क्षमताओं के बायोगैस प्लांट स्थापित किए जायेंगे और प्रति बायो गैस प्लाण्ट से रोजाना 5 से 10 मैट्रिक टन जैविक खाद (बायो मैन्योर) का निर्माण होगा। इसके लिए प्रत्येक गौशाला को लागत का 50 प्रतिशत या 40 लाख रुपये तक का अनुदान गोपालन विभाग द्वारा दिया जाएगा। यह जानकारी सहकारिता एवंगोपालन मंत्री अजय सिंह किलक ने दी। किलक ने बताया कि 25 बायो गैस प्लाण्ट से एक साल में लगभग एक लाख मैट्रिक टन जैविक खाद तैयार होगा। राजस्थान देश में पहला राज्य होगा जो इतनी बड़ी मात्रा में बायो गैस प्लाण्ट से जैविक खाद तैयार करेगा। यह मैन्योर किसानों के लिये खेती में संजीवनी का कार्य करेगा। मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे द्वारा कि गई बजट घोषणा की पालना में गौशाला बायोगैस सहभागिता योजना लागू कर दी गई है। प्रथम चरण में 25 गौशालाओं का चयन किया जाएगा और उनको 10 करोड़ रुपये की राशि उपलब्ध करायी जाएगी। उन्हीं पंजीकृत गौशालाओं/काजी हाऊस का चयन होगा जो स्वयं के स्वामित्व की 25 बीघा की आदि भूमि पर संचालित है। इच्छुक गौशालाओं को अपना प्रस्ताव जिला स्तरीय गोपालन समिति को देना होगा। समिति प्रस्तावों की व्यावहारिकता एवं उपयोगिता के आधार पर निदेशालय गोपालन को प्रस्तावों की अनुशंषा करेगा। निदेशालय जिलों से प्राप्त प्रस्तावों की सक्षम स्तर से जांच करेगा। सही पाए जाने पर पात्र गौशाला को निर्माण कार्यों की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति को जारी की जाएगी। गोपालन मंत्री ने बताया कि मुख्यमंत्री श्रीमती राजे की सोच है कि गौशालाएं आत्मनिर्भर बने और इसी के तहत यह कदम उठाया गया है।

रजिस्ट्रार राजन विशाल ने संभाला कॉनफैड के प्रशासन का पदभार

जयपुर। रजिस्ट्रार, सहकारिता राजन विशान ने राजस्थान राज्य सहकारी उपभोक्ता संघ लि. जयपुर के प्रशासक का पदभार संभाल लिया। उन्होंने कहा कि उपभोक्ता संघ के माध्यम से उपभोक्ताओं को उच्च गुणवत्ता पूर्ण वस्तुओं एवं सेवाओं को उचित मूल्य पर त्वरित ढंग से उपलब्ध कराया जायेगा। उन्होंने कहा कि जयपुर के प्रसार को देखते हुए दूर दराज के क्षेत्रों में भी उपभोक्ता संघ के सुपर स्टोर खोले जायेंगे ताकि उन्हें बेहतर उपभोक्ता सेवायें मुहैया कराई जा सकें। उन्होंने कहा कि उपभोक्ता संघ के माध्यम से पेंशनर्स को उपलब्ध कराई दवाइयों की सुविधा को और बेहतर किया जायेगा। इस मौके पर उपभोक्ता संघ के प्रबंध निदेशक रायसिंह मोजावत ने पुष्पगुच्छ भेंट कर प्रशासक, कॉनफैड राजन विशाल का अभिनन्दन किया। मोजावत ने कॉनफैड की गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त में प्रशासक को अवगत कराया।

मुख्यमंत्री ने की प्रदेश में न्यूनतम दैनिक मजदूरी बढ़ाने की घोषणा

जयपुर। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने प्रदेश में न्यूनतम मजदूरी की दरें बढ़ाने की घोषणा की है। उन्होंने सवाई माधोपुर जिले के चौथ का बरवाड़ा में जनसंवाद कार्यक्रम में प्रदेश में श्रमिक वर्ग को बढ़ती हुई महंगाई से राहत देने के लिए न्यूनतम मजदूरी में वृद्धि की गई है। न्यूनतम मजदूरी की सभी श्रेणियों में 6 रूपये प्रतिदिन की वृद्धि की गई है। जारी अधिसूचना के अनुसार, अकुशल श्रमिक की दैनिक मजदूरी 207 रूपये से बढ़ाकर 213 रूपये, अर्धकुशल श्रमिक की मजदूरी 217 से बढ़ाकर 223 रूपये, कुशल श्रमिक की मजदूरी 227 से बढ़ाकर 233 रूपये एवं उच्च कुशल श्रमिक की मजदूरी 277 रूपये से बढ़ाकर 283 रूपये होगी। उन्होंने कहा कि नई बढ़ी हुई दरें 1 जनवरी, 2018 से प्रभावी होंगी।

सृष्टि एग्रो
विज्ञापन हेतु
सम्पर्क करें
मोबाइल : 7728897568
jaipur@srushtiagronews.com
विज्ञापन मात्र एक कॉल की दूरी पर

उदित ओवरसीज प्रा.लि.

राजस्थान सरकार द्वारा उर्वरक अब मान्यता प्राप्त दरों व अनुदान पर उपलब्ध
फर्टिलाइजर
1. जिंक सल्फेट 21 प्रश.
2. जिंक सल्फेट 33 प्रश.
3. फेरस सल्फेट 19 प्रश.
4. कॉपर सल्फेट 24 प्रश.
5. मैग्नीशियम सल्फेट 9.6 प्रश.
बायो फर्टिलाइजर
1. राइजोबियम पाउडर
2. एजेटोबेक्टर पाउडर
3. पी.एस.बी. पाउडर

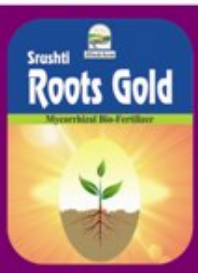

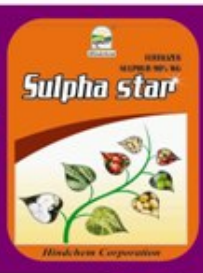

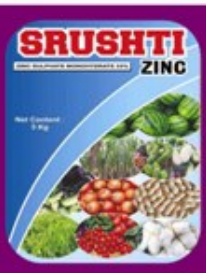

SRUSHTI MONOZINC
Zinc Sulphate (Agri. Grade)
Zinc :33%(Min.)
Sulphur : 15% (Min.)
Udit Overseas Pvt. Ltd.

SRUSHTI FERROUS
Ferrous Sulphate Fertilizer
19% Ferrous
10.5% Sulphur
Udit Overseas Pvt. Ltd.

SRUSHTI MAGNESIUM
Magnesium Sulphate Fertilizer
Magnesium 9.6%
Udit Overseas Pvt. Ltd.

FERTILIZER
- SRUSHTI HIZINC (MICRONUTRIENT MIXTURE)
- ZINC EDTA 12%
- FERROUS EDTA 12%
- BORON 20%
- COPPER SULPHATE 24%
- SULPHUR 90% WG

BIO FERTILIZERS
- MYCORRHIZA (ROOTS GOLD)
- AZOSPIRILLUM
- PHOSPHATIC SOLUBILISING BACTERIA (PHOS UP)
- POTTASIUM MOBILIZING (POTA RISE)

WELCOME INQUIRY Contact : 7975653498 (Rajesh

137, Industrial Area Dehra, Tehsil Chomu, Dist, Jaipur

स्वामी : सुरेश जी. शर्मा, प्रकाशक एवं मुद्रक विकाश शर्मा की ओर से जयपुर प्रिंटर्स, सी-565, 4-सी स्कीम न्यू लोहामण्डी रोड, सीकर रोड जयपुर से मुद्रित किया गया और प्लाट नं. बी-82 नीलगिरी कॉलोनी, नई अनाज मंडी के पीछे, विश्वकर्मा एरिया, जयपुर 302039 यहां से प्रकाशित किया। सम्पादक : सुरेश जी. शर्मा सत्यापित शीर्षक क्रमांक RAJHIN/2014/58645 : Tel. 0141-3130277, Mob. 7728897568, E-mail : jaipur@srushtiagronews.com